आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2310 • उदयपुर, बुधवार 21 अप्रेल, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

जापान का उपग्रह कैप्चर करेगा अंतरिक्ष का कचरा

अंतरिक्ष से मलबे व कचरे को हटाने के लिए जापान ने हाल ही एक सैटेलाइट का प्रक्षेपण किया है। कजाकिस्तान स्थित एक अंतरिक्ष केंद्र से 22 मार्च को जापान स्टेंडर्ड टाइम (जेएसटी) के अनुसार दोपहर तीन बजे के बाद रूस के एक रॉकेट के जरिए यह सैटेलाइट लॉन्च किया गया, जो शाम तक अंतरिक्ष की कक्षा में पहुंच गया। निस्संदेह अंतरिक्ष की सफाई के लिए दुनिया में पहली बार गंभीरता से कोई प्रयास किया गया है। टोक्यो स्थित स्टार्ट–अप एस्ट्रोस्केल द्वारा निर्मित इस सैटेलाइट का उद्देश्य अंतरिक्ष से कचरा और मलबा हटाने संबंधी कार्य को अंजाम देना है। सैटेलाइट में एक 'सर्विसर' सैटेलाइट है जो प्रतीकात्मक कचरे के ढेर को दर्शाती है। 'सर्विसर' सैटेलाइट, 'क्लाइंट' सैटेलाइट को 340 मील (550 किलोमीटर) के अक्षांश पर छोड़ता है और उसके बाद सेंसरों की सहायता से उस तक पहुंचता है। यह सैटेलाइट एक शक्तिशाली चुम्बक प्रतीकात्मक कचरे को उठाता है और जैसे ही ये दोनों पृथ्वी के वायुमंडल में पहुंचते है, जल जाते है।

अंतरिक्ष में छोड़ दिए गए सैटेलाइट और रॉकेट ही अंतरिक्ष का कचरा है। माना जाता है कि अंतरिक्ष में 10 सेंटीमीटर से बड़े आकार के 20,000 से अधिक कचरे के टुकड़े फैले हुए है और तीव्र गति से पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहे है। अगर कचरे का कोई टुकड़ा किसी कार्यशील सैटेलाइट या अंतरिक्ष में संचालित सुविधा केन्द्र से टकरा जाता है तो न केवल उसकी कार्यप्रणाली में खराबी आ सकती है, यह किसी दुर्घटना का सबब भी बन सकता है।

देशभर में हरियाली फैलाने की रफ्तार होगी दोगुनी

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण की बढ़ती चुनौतियों के बीच सरकार ने इससे निपटने के उपायों पर भी तेजी से काम शुरू कर दिया है। फिलहाल इस दिशा में जो बड़ा कदम उठाया गया है, उसमें हरियाली फैलाने की रफ्तार दोगुनी करने का फैसला लिया गया है।

इसके साथ ही पौधारोपण के नए लक्ष्य भी तय किए गए हैं, जिसमें वर्ष 2023–24 तक देशभर में सालाना 253 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे। अभी तक यह लक्ष्य सालाना सिर्फ 121 करोड़ पौधों को लगाने का ही रखा गया था। हालांकि मौजूदा समय में देशभर में सालाना 150 करोड़ पौधे रोपे जा रहे हैं। इस बीच पौधारोपण के बढ़े हुए लक्ष्यों के साथ राज्यों के लिए भी नए लक्ष्यों को तय करने का काम शुरू कर दिया गया है।

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने हरियाली बढ़ाने की रफ्तार दोगुनी करने की यह जानकारी विजन–2024 के जरिये दी है। इसके तहत अगले तीन साल में देशभर में कुल 638 करोड़ पौधे रोपे जाएंगे।

फिलहाल इसका जो रोडमैप तैयार किया गया है, उसके तहत वर्ष 2021–22 में कुल 175 करोड़ पौधे रोपे जाएंगे। जबकि वर्ष 2022–23 में कुल 210 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे। इसी तरह वर्ष 2023–24 में कुल 253 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे। मंत्रालय के मुताबिक पौधारोपण के इन नए लक्ष्यों को बढ़ती चुनौतियों को देखते हुए तय किया गया है।

राज्यों के लिए भी तय किए जाएंगे नए लक्ष्य

मंत्रालय के मुताबिक, पौधारोपण के इन लक्ष्यों के साथ ही जल्द ही राज्यों के लिए भी नए लक्ष्य तय किए जाएंगे। हालांकि यह राज्यों के पिछले लक्ष्यों के आधार पर ही तय किए जाएंगे। राज्यों को पौधारोपण के लिए यह राशि केंद्र सरकार की ओर से कैंपा (कंपेंसेटरी अफारेस्टेशन फंड मैनेजमेंट एंड प्लानिंग अथारिटी) फंड से दी जाती है। पर्यावरण मंत्रालय देश में हरियाली बढ़ाने को लेकर इसलिए भी काफी उत्साहित है क्योंकि उसे इस मुहिम में अच्छी सफलता मिली है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, देश में वर्ष 2014 से 2019 के बीच वन क्षेत्र और हरे–भरे क्षेत्रों में 13 हजार वर्ग किमी की बढ़ोतरी हुई है जो अपने आप में एक रिकार्ड है।

सेवा–जगत्
नि:स्वार्थ सेवा, नारायण सेवा

संस्थान द्वारा हरिद्वार महाकुंभ में नि:शुल्क शल्य चिकित्सा एवं कृत्रिम अंग उपकरण वितरण शिविर

हरिद्वार में हो रहे कुंभ मेले के लिए नारायण सेवा संस्थान द्वारा निःशुल्क शल्य चिकित्सा एव उपकरण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में निर्वाणी अखाडे के श्री महंत श्री धर्मदास जी महाराज, राष्ट्रीय महामंत्री श्री गौरीशंकर जी महाराज व अन्य संतों द्वारा ध्वजारोहण करते हुए कोरोना प्रोटोकॉल के तहत दिव्यांग भाई–बहनों के निःशुल्क शल्य ऑपरेशन एवं ट्राइसाईकिल, व्हीलचैयर, केलिपर्स आदि वितरण किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि आदरणीय मंत्री श्री हरक सिंह जी रावत, आदरणीय राज्यमंत्री स्वामी श्री यतीश्वरानन्द जी, श्री अनिता जी शर्मा, श्रीमान् राहुल जी सचान, उत्तराखण्ड़ उपाध्यक्ष पंजाबी महासभा श्री जगदीश जी पाव, उत्तराखण्ड़ व्यापार संघ अध्यक्ष श्रीमान् संजय जी चौपड़ा, श्रीमान् किशन जी, उप मेलाधिकारी श्री रामजी शरण, आखिल भारतीय ब्राह्मण समाज अध्यक्ष श्री अधीर जी कौशिक, विशाल जी गर्ग, आसूचना ब्यूरो विभाग से श्री संजय जी आदि कई गणमान्य मेहमान उपस्थित रहे। संस्थान निदेशिका पलक जी अग्रवाल, रोहित जी शर्मा, अनिल जी आचार्य आदि साधकगणों ने सेवाएं दी। गणमान्य मेहमानों ने संस्थान का पाण्डल में संस्थान द्वारा हो रहे सेवा कार्यों का अवलोकन किया। पलक जी ने संस्थान द्वारा सेवा प्रकल्पों के बारे जानकारी देते हुए बताया कि संस्थान 36 वर्षों से सेवा कार्य की जानकारी दी। कोरोना काल में पचास हजार परिवारों को निःशुल्क राशन वितरण भोजन वितरण, दिव्यांग को निःशुल्क प्रशिक्षण, वर्ल्ड ऑफ ह्युमूनिटी निर्माण हेतु रू–ब–रू– करवाया।

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते है कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो मैं 4 जनवरी को उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मै इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद ...आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

ईमानदारी ही सफलता की कुंजी

पुराने समय में एक राजा के तीन बेटे थे। वह तीनों से ही बहुत प्रेम करता था। जब राजा बूढ़ा हुआ तो वह सोचने लगा कि तीनों बेटों में से अगला राजा किसे नियुक्त किया जाए। बहुत सोच–विचार करने के बाद भी राजा ने अपने तीनों बेटों को बुलवाया।

राजा ने तीनो बेटों को एक–एक बीज दिया और कहा कि अब से छह महीने के बाद जिसका पौधा सबसे अच्छा होगा, उसे राजा घोषित किया जाएगा। इसीलिए अपने–अपने बीज ले जाओ और शाही बाग में एक–एक गमले में इन्हें उगाओ। इनकी अच्छी तरह देखभाल करना।

तीनों राजकुमारों ने अपना–अपना बीज लिया और शाही महल में एक–एक गमले में बीज लगा दिया। तीनों भाइयों ने बहुत अच्छी तरह गमलों में खाद–पानी डाला। धूप–छांव का ध्यान रखा। दो भाइयों के पौधे तो बहुत अच्छी तरह पनप गए। लेकिन, छोटे राजकुमार का पौधा नहीं पनपा। दोनों राजकुमार छोटे भाई के गमले को देखकर उसका मजाक उड़ाते थे, क्योंकि उसके गमले में पौधा पनपा नहीं तो गमला खाली ही था। इसी तरह छह माह बीत गए। राजा ने तीनों राजकुमारों से अपने–अपने गमले लेकर आने के लिए कहा।

तीनों भाई अपने–अपने गमले लेकर राजा के सामने पहुंच गए। छोटे राजकुमार ने राजा को बताया कि उसने बहुत मेहनत की, लेकिन मेरा बीज तो पनपा ही नहीं। राजा ने तीनों गमले बहुत ध्यान से देखे और बोला कि अब समय आ गया है कि मैं तुम्हें बता दूं कि अगला राजा कौन बनेगा?

दोनों बड़े राजकुमार खुश थे। छोटे राजकुमार ने सोचा कि उसका तो पौधा ही नहीं उगा तो मेरा राजा बनना तो मुश्किल है। राजा ने कहा कि अब इस राज्य का उत्तराधिकारी सबसे छोटा राजकुमार होगा।

ये सुनकर दोनों बड़े राजकुमार चौंक गए। राजा ने फिर कहा कि मैंने तुम तीनों को खराब बीज दिए थे। वो उग ही नहीं सकते थे। तुम दोनों भाइयों ने अपने–अपने बीज बदल दिए। लेकिन, छोटे राजकुमार ने ईमानदारी से उसी बीज की देखभाल की और जब बीज नहीं पनपा तो वह उसी गमले को लेकर यहां आया है। उसने ईमानदारी नहीं छोड़ी, लेकिन तुम दोनों ने बेईमानी की है। एक राजा को हमेशा ईमानदार रहना चाहिए। छोटे राजकुमार ने ईमानदारी का साथ दिया है, इसीलिए अब वही इस राज्य का राजा बनेगा।

परिवर्तन ऐसे भी

एक दिन स्वामी विवेकानंद किसी गांव में प्रवचन देने जा रहे थे। उनके साथ कई शिष्य भी थे। रास्ते में उनके एक विरोधी का घर भी था। स्वामीजी के विरोधी ने जब उन्हें देखा तो वह गुस्सा हो गया।

वह व्यक्ति विवेकानंद से नफरत करता था। जैसे ही उसने स्वामीजी को देखा वह दौड़कर उनके पास पहुंचा और जोर–जोर से गालियां देने लगा। स्वामीजी ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और वे आगे बढ़ते रहे। विरोधी व्यक्ति भी उनके पीछे–पीछे चलते हुए चिल्ला–चिल्लाकर गालियां दे रहा था। स्वामीजी के साथ चल रहे सभी शिष्य उस व्यक्ति के गलत व्यवहार से परेशान हो रहे थे, उन्होंने देखा कि स्वामीजी सभी से बात करते हुए शांति से आगे बढ़ रहे हैं। विरोधी व्यक्ति को किसी ने रोका–टोका नहीं तो वह आजाद हो गया, और ज्यादा गंदे शब्दों का उपयोग करने लगा। वह गालियां देते–देते हद पार कर रहा था।

कुछ ही देर बाद वे लोग उस गांव की सीमा तक पहुंच गए, जहां स्वामीजी को प्रवचन देना था। वहीं गांव की सीमा पर स्वामीजी रुके और उस विरोधी व्यक्ति से कहा, 'देखो भइया, तुम बहुत विद्वान हो। शब्दों का भंडार तुम्हारे पास है। उन शब्दों को गालियां बनाकर जितना तुम मुझे दे सकते थे, तुमने दे दिया है। मुझे इसी गांव में जाना है। अब तुम यहीं रुक जाओ, क्योंकि मेरे पीछे–पीछे तुम इस गांव में आओगे और इसी तरह मुझे गालियां देते रहोगे तो सभा स्थल पर मेरे जो भक्त हैं, वे तुम्हें दंड देंगे और मैं तुम्हें उन लोगों से बचा नहीं पाऊंगा। मुझे तकलीफ होगी कि मेरी वजह से तुम्हारे जैसे विद्वान व्यक्ति की पिटाई हो गई। पिटोगे तुम और पाप मुझे लगेगा। अच्छा तो ये है कि तुम यहीं रुक जाओ और वापस लौट जाओ। जो भेंट तुमने मुझे दी है, वह भी अपने साथ वापस ले जाओ।'

विवेकानंदजी का व्यवहार देखकर वह व्यक्ति चौंक गया। उसे ऐसे व्यवहार की उम्मीद ही नहीं थी। वह स्वामीजी के पैरों में गिर पड़ा और उनसे क्षमा मांगने लगा।

जीवन की सच्चाई

एक बार कागज का एक टुकड़ा हवा के वेग से उड़ा और पर्वत के शिखर पर जा पहुँचा। पर्वत ने उसका आत्मीय स्वागत किया और कहा–भाई । यहाँ कैसे पधारे? कागज ने कहा–अपने दम पर।

जैसे ही कागज ने अकड़ कर कहा अपने दम पर और तभी हवा का एक दूसरा झोंका आया और कागज को उड़ा ले गया।

अगले ही पल वह कागज नाली में गिरकर गल–सड़ गया। जो दशा एक कागज की है वही दशा हमारी है। पुण्य की अनुकूल वायु का वेग आता है तो हमें शिखर पर पहुँचा देता है और पाप का झोंका आता है तो धरातल पर पहुँचा देता है।'

'किसका मान? किसका गुमान? सन्त कहते हैं कि जीवन की सच्चाई को समझो। संसार के सारे संयोग हमारे अधीन नहीं हैं।

कर्म के अधीन हैं और कर्म कब कैसी करवट बदल ले कोई भरोसा नहीं । इसलिए कर्मों के अधीन परिस्थितियों का कैसा गुमान?'

NARAYAN SEVA SANSTHAN | 2021 महाकुम्भ हरिद्वार
Our Religion is Humanity

सहयोग राशि ₹21000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number: 31505501196
IFSC Code: SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001
Paytm | UPI | yono SBI | SBI Payments
UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN | 2021 महाकुम्भ हरिद्वार
Our Religion is Humanity

21 दिवस करवाएं संत भोजन सेवा

5 ऑपरेशन का करें सहयोग

5 कृत्रिम अंगों का करें सहयोग

सहयोग राशि ₹100000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number: 31505501196
IFSC Code: SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001
Paytm | UPI | yono SBI | SBI Payments
UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

सम्पादकीय

एक शब्द है अतिथि। यानी जिसके आने की तिथि तय न हो। या आने की तिथि ज्ञात न हो। यह संदर्भ कितना सही है क्या पता? परन्तु यदि इस अर्थ को उलट दिया जाय कि जिसके जाने (मृत्यु) की तिथि ज्ञात न हो वह अतिथि है, तो इस संसार के सभी मनुष्य अतिथि हैं। जन्म लेने की घोषणा का तो लगभग समय निर्धारित किया जा सकता है पर मृत्यु हेतु तो असंभव है। सब जानते हैं कि यह जीवन नश्वर है। न जाने कब जाना है? किन्तु आश्चर्य है कि हम सब अतिथि होते हुए भी यहाँ पर कई जन्मों तक बसने और गुजारा करने का इंतजाम करते हैं। यह निश्चित है कि जहाँ जाना है वहाँ ये सब भौतिक वस्तुएं कोई भी सहयोग नहीं कर पायेंगी, फिर भी हम इनसे मोहित हैं। हम वास्तव में अतिथि ही हैं। कोई भी अतिथि किसी के घर जाता हैं तो वहाँ की वस्तुओं का उपभोग तो करता है पर लौटते समय उन्हें ले जा नहीं सकता। वैसे ही हम सब मनुष्य इस संसार में अतिथि हैं। जब अतिथि हैं तो क्यों मेजबान के घर के दंद–फंद में उलझना? अतिथि की तरह जाने की तैयारी रखें तो शायद सच्चे मानव के लक्षण शीघ्र प्रकट होंगे।

कुछ काव्यमय

जो अतीत से सीखता,
उसका सुखी भविष्य।
भावी तो इक यज्ञ है,
बना अतीत हविष्य।।
वर्तमान में जी रहे,
वे ही मानव खास।
उनसे ही युग बदलता,
उनसे ही है आस।।
त्रिकालों को जीतना,
मानव जीवन सार।
ज्यों ज्यों जीते समय को,
तीखी होती धार।।
समय बड़ा बलवान है,
यह सब माने लोग।
पर मानव से बलवती,
कोई नहीं प्रयोग।।
समय जीत ले मानवी,
यही उसे वरदान।
बस संकल्पों पर टिका,
कर लो शरसंधान।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

सच्ची चोट

रामचन्द्र जी ने अपने पुत्र सुरेश को लिखा–पढ़ा कर डॉक्टर बनाया। इसके लिए वह स्वयं भूखे पेट रहे, मोटा वस्त्र पहना–गरीबी से साक्षात्कार किया। चिकित्सक बनने के बाद सुरेश पर लक्ष्मी की कृपा हुई। बंगला बनवा लिया, कार खरीद ली, सेवक रख लिया। रामचन्द्र जी बॉलकनी में बैठे देख रहे थे। एक दिन द्वार के निकट कार खड़ी थी, उनका पुत्र कही बाहर जाने के लिए तैयार हो कर निकला। इतने में एक वृद्धा आई। उसका पुत्र बीमार था। उसने डॉक्टर से कहा कि वह एक बार चल कर उसके पुत्र को देख ले। इलाज के अभाव में उसका बचना मुश्किल हो जाएगा। लेकिन

डॉक्टर ने कहा कि उसे क्लब जाना है। अतः अभी वह और कहीं नहीं आ पाएगा। वृद्धा ने बहुत अनुनय–विनय की तो डॉक्टर ने पूछा – मेरी फीस के पचास रुपए हैं तेरे पास ? वृद्धा ने अपनी लाचारी बताई और कहा कि "अभी तो मेरे पास कुछ नहीं है। बाद में जैसे–तैसे आपका ऋण अवश्य चुका दूंगी।" उसने सुरेश के पैरों पर अपना सिर रख दिया। लेकिन उसने उसे झटक दिया और अपनी कार की ओर बढ़ गया। इससे पहले कि सुरेश कार में बैठ कर रवाना होता, रामचन्द्र जी दौड़ते हुए वहाँ आए और डॉक्टर के गाल पर एक थप्पड़ मारा। "क्या मैंने तुझे इस लिए डॉक्टर बनाया था कि तू गरीबों का अनादर करे ? क्षमा मांग इन वृद्धा माँ से और इनके साथ जा कर इनके पुत्र को उचित दवा दे।"

अब डॉक्टर साहब कहते हैं– "जब भी मेरे सामने कोई गरीब मरीज आता है मेरा हाथ स्वतः अपने गाल पर चला जाता है। शायद आपके और हमारे साथ भी ऐसी चोट कभी हुई हो ?

–कैलाश 'मानव'

बड़ा यज्ञ

कौन–सा यज्ञ बड़ा होता है? यज्ञ जो परोपकार से पूर्ण है या यज्ञ जो हवन सामग्री की आहुतियों से परिपूर्ण है– इसी प्रश्न का उत्तर ढूँढती एक कहानी–

कुरुक्षेत्र युद्ध जीतने के पश्चात् पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया। वह यज्ञ अत्यन्त विशाल था। उसमें अनेक राज्यों के राजा– महाराजा, राजकुमार आदि उपस्थित थे। ऐसा भव्य यज्ञ पहले कभी भी नहीं हुआ था। लोग यज्ञ को देखकर आश्चर्यचकित थे, लेकिन लोगों के अचम्भे का तब ठिकाना नहीं रहा, जब एक नेवला वहाँ आया और यज्ञ–वेदी के पास पड़ी समिधा में लोट–पोट होने लगा। आश्चर्यचकित लोगों ने नेवले से समिधा में लोट–पोट होने का कारण पूछा तो नेवले ने बताया कि मेरा आधा शरीर सोने का है तथा आधा शरीर सोने का नहीं है। मैं अपना बचा हुआ आधा शरीर भी सोने का बनाने का प्रयास कर रहा हूँ। क्या यज्ञ उतना भव्य हुआ है, जितना आप सभी कह रहे हैं कि मेरा आधा बचा हुआ शरीर भी सोने का हो जाए। लोगों को नेवले के बातें समझ में नहीं आईं।

तब नेवले ने विस्तारपूर्वक बताया– मैं एक ऐसे घर से आ रहा हूँ, जहाँ ब्राह्मण माता–पिता अपने दो बच्चों के साथ रहते थे। वे अपने दो समय का भोजन बड़ी मुश्किल से जुटा पाते थे, लेकिन वे बहुत दयालु और परोपकारी थे।

एक दिन उनके पास दो दिन भूखा रहने के पश्चात् थोड़े से भोजन की व्यवस्था हो पाई। उन्होंने वह थोड़ा–सा भोजन जो उन्हें मिला था, आपस में बाँटा तथा चारों एक साथ बैठकर खाने ही वाले थे कि एक अतिथि वहाँ आ पहुँचा तब घर के मुखिया ने अपने हिस्से का भोजन अतिथि को खिला दिया, लेकिन अतिथि की भूख शांत नहीं हुई तो मुखिया की पत्नी ने अपना भोजन भी अतिथि को परोस दिया।

लेकिन अतिथि के उदर में और भूख बची थी तो दोनों बच्चों ने बारी–बारी से अपना भोजन अतिथि को खिला दिया। अतिथि सभी को आशीर्वाद देकर चला गया। चारों भूखे ही सो गए। जिस जगह अतिथि ने भोजन किया था, वहाँ भोजन के कुछ दाने गिर गए थे। मैं (नेवला) उस जगह लोट–पोट हुआ, जिससे भोजन के दाने मेरे शरीर से चिपक गए तथा जहाँ–जहाँ भोजन के दाने चिपके मेरे शरीर का वह हिस्सा सुनहरा हो गया।

नेवले ने आगे कहा– जिस जगह से मैं आ रहा हूँ, वह भी एक यज्ञ ही था, क्योंकि वहाँ भी अतिथियों को भोजन करवाया गया था तथा यहाँ भी एक यज्ञ ही हो रहा है। मैं यहाँ भी लोट रहा हूँ, परंतु मेरे शरीर को कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा है। मैं तो देखना चाहता था कि कौन–सा यज्ञ बड़ा है?

वास्तव में यहाँ के यज्ञ में तो कोई खास बात नहीं है, परंतु ब्राह्मण के घर का यज्ञ तो बहुत बड़ा था। जो लोग दान देते हैं तथा परोपकार करते हैं उनके द्वारा दी गई त्याग की आहुति कभी बेकार नहीं जाती। उस आहुति से किसी न किसी का भला तो अवश्य होता ही है। अतः दान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

जनवरी 2010 में महाराज ज्ञानदास अपने दल–बल सहित उदयपुर पधारे। कैलाश ने उनके ठहरने आदि की व्यवस्था अपने यहां ही की। महाराज ने उसके सेवा कार्यो का अत्यन्त निकट से अध्ययन किया और प्रशंसा करते हुए कहा कि दीन– दुखियों की सेवा करना ही सच्चा साधुत्व है। 3 माह बाद ही अप्रेल में हरिद्वार में कुंभ मेले का आयोजन था। महाराज ने उसे कुम्भ में आने का आमन्त्रण दिया तो कैलाश ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। कैलाश ने जब उन्हें बताया कि नारायण सेवा द्वारा कुंभ मेले में ऑपरेशन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है तो वे आश्चर्यचकित रह गये।

कैलाश ने बताया कि इस सम्बन्ध में मेला अधिकारी से बातचीत भी हो चुकी है। महाराज ने कहा– वहां तो धूल उड़ती है, आंधी आती है, आपके सारे टेन्ट उखड़ जायेंगे तो ऑपरेशन कैसे करोगे। कैलाश ने बताया कि ऑपरेशन हेतु प्लाई के विशेष ढांचे बनाये जायेंगे जो धूल–आंधी झेल सकें। महाराज यह सुन कर संतुष्ट हो गये। इसके पश्चात् काफी देर तक इधर–उधर की बातें होती रही उसके बाद अचानक महाराज बोले– हम वैष्णव अखाड़ो मे जगद्गुरू रामानन्दचार्या के अर्न्तगत आपको आचार्य महामण्डलेश्वर व निर्वाणी पीठाधीश्वर उपाधि से अलंकृत करना चाहेंगे। कैलाश यह बात सुन दंग रह गया। वह कोई साधु नहीं था, ऐसी उपाधि उसे कैसे दी जा सकती है। महाराज उसके मन में चल रहे सवालों को शायद ताड़ गये। वे बोले– अखाड़े दो तरह के हैं, एक वैष्णव अखाड़ा और दूसरा संन्यासी अखाड़ा। संन्यासी अखाड़ों को शैव अखाड़ा भी कहते हैं, इनमें साधु होना जरूरी होता है मगर वैष्णव अखाड़ों में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं।

अंश-235

ब्लड प्रेशर की बढ़ने की समस्या को शरीर में इन बदलावों से जाने

आजकल बदलते खानपान और रहन सहन के कारण हाई ब्लड प्रेशर की समस्या आम बात हो गई है। सामान्य स्वास्थ्य वाले व्यक्ति का उच्चतम रक्तचाप 120 तथा न्यूनतम 80 होता है। सेहतमंद रहने के लिए रक्तचाप सामान्य रहना बहुत जरूरी है। तो आइये आज हम आपको बताते हैं कि हाई ब्लड प्रेशर की समस्या होने से पहले शरीर में होते है ये बदलाव।

प्रारंभिक लक्षण में संबंधित व्यक्ति के सिर के पीछे और गर्दन में दर्द रहने लगता हैं। कई बार इस तरह की परेशानी को वह नजरअंदाज कर जाता है, जो आगे चलकर गंभीर समस्या बन जाती है।

यदि आप खुद को ज्यादा तनाव में महसूस कर रहे हैं, तो यह उच्च रक्तचाप का संकेत हो सकता है। ऐसे में व्यक्ति को छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा आने लगता है। कई बार वह सही–गलत की भी पहचान भी नहीं कर पाता।

कई बार शरीर में कमजोरी के कारण भी सिर चकराने की परेशानी हो सकती है। ऐसे कोई लक्षण दिखाई दें, तो पहले अपने डॉक्टर से परामर्श लें।

यदि आपको थोड़ा काम करने पर थकान महसूस होती है या जरा सा तेज चलने पर परेशानी होती है या फिर आप सीढ़ियां चढ़ने में काफी थक जाते है, तब भी उच्च रक्तचाप से ग्रस्त हो सकते हैं।

यदि नाक से खून आए, तब भी आपको जांच करानी चाहिए। आमतौर पर उच्च रक्तचाप के रोगियों के साथ यह समस्या होती है कि उन्हें रात में नींद आने में परेशानी होती है। हालांकि यह परेशानी किसी चिंता के कारण या अनिंद्रा की वजह से भी हो सकती है।

यदि आप महसूस करते हैं कि आपके हृदय की धड़कन पहले के मुकाबले तेज हो गई हैं या आपको अपने हृदय क्षेत्र में दर्द महसूस हो रहा है, तो यह उच्च रक्चाप का भी कारण हो सकता है।

अनुभव अमृतम्

आदरणीय कमला जीजी का सनवाड़ में विवाह हुआ। परम् पूज्य द्वारकेश जी गर्ग साहब के साथ गर्ग परिवार। सनवाड़ से जब बारात आयी। रावली पोल में ठहराया– उनको! अमरचन्द्र जी अग्रवाल साहब परम् पूज्य द्वारकेश जी के पिताश्री जी महान् संत पुरुष। द्वारकेश जी गर्ग साहब के साथ उनके बड़े भाई जगदीश जी अग्रवाल सर्कल इंस्पेक्टर थानेदार साहब उदयपुर भी, भीलवाड़ा भी उनके छोटे भाई प्रेम जी उनके छोटे भाई जो चित्तौड़ में नगर परिषद में बहुत बड़े पद पर रहे है। उनके सबसे छोटे भाई हनुमान बंशी जी बड़े भायाजी श्रीमान् देवीलाल जी अग्रवाल साहब ने पहले से देशी घी एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया था।

मेरी भतीजी का विवाह है, उस समय हाण्डियों में घी भर–भरकर के रखा जाता था। मिलावट का कहीं नाम भी नहीं। देशी का मतलब देशी, और साल भर बाद सुशीला जी का विवाह हुआ। डूंगला से बारात आयी। बस भी थी बैलगाड़ी भी थी। बारात को ठहराया गया। अद्भुत पूज्य राधेश्याम भाई साहब का विवाह उदयपुर में पांचुलाल जी, वरदीचन्दजी, दीपलाल जी साहब की पुत्री श्रीमान् पुष्पा जी के साथ उदयपुर बारात लेकर के पधारे। बारात जाने से पहले विवाह के अन्तराल में मैं पूज्य भाभीजी को पत्र लिखता उनका उत्तर आता। इंतजार करते थे आज पत्र आयेगा।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 115 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023